स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

मालाबार का बड़ी चित्तीदार कस्तूरी बिलाव

मालाबार कस्तूरी बिलाव *विवैरा मेगास्पिला सिवेटिना* या मलयालम में जवादी वेरुकु के नाम से जाना जाने वाला यह प्राणी विलुप्ति का खतरा झेल रहा है। यह कभी दक्षिण भारत में केरल और कर्नाटक के निचले तटीय इलाकों में आम रूप से घूमते हुए पाया जाता था मगर बीसवी सदी की शुरुआत में ही दुर्लभ होने लगा था। इनका शिकार कीमती खुशबूदार सिवेटोन कस्तूरी के लिए किया जाता है। हालांकि 1940 के दशक में इसका कृत्रिम विकल्प तैयार हो गया था मगर प्राकृतिक कस्तूरी का मोह छूटा नहीं है। अनुमान है कि वर्ष 1999 में तकरीबन ढाई सौ कस्तूरी बिलाव बचे थे।

तकरीबन ढाई-तीन फुट लंबे और 8-9 किलो वज़न के इन कस्तूरी बिलाव का बाहरी आवरण स्लेटी, क्रीम रंग का होता है जिस पर काले-काले धब्बे होते हैं जबकि पूंछ पट्टेदार होती है। इसका मूल निवास पश्चिमी घाट की तराई के मालाबार तट के नम जंगल हैं। यहां ये जंगली मैदानी इलाकों और उसके निकट के पहाड़ी ढलानों में पाए जाते हैं। कभी ये इन इलाकों में आम थे लेकिन जंगलों के विनाश के कारण ये विलुप्ति की कगार पर आ पहुंचे हैं। आज ये मालाबार के काजू बागानों में पाए जाते हैं।

ये रात्रिचर, सर्वभक्षी, आक्रामक व एकांतप्रिय होते हैं। ये छोटे स्तनधारी, रेप्टाइल्स, उभयचर, मछलियों से लेकर शाक पत्तियां भी खा लेते हैं।

इनकी गुदा ग्रंथि से होने वाले रिसाव का उपयोग इत्र, देशी दवाइयों और बीड़ी सिगरेट को सुगंधित बनाने में होता है।

नकदी खेती के बढ़ते क्षेत्र से इनके प्राकृतवास तेज़ी से खत्म हो रहे हैं जिससे इनकी आबादी को खतरा बढ़ता जा रहा है। साथ ही इनका शिकार भी हो रहा है जिसके चलते आज ये लुप्तप्राय हैं।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी